# प्रथम अध्याय

# अमरकांत का व्यक्तित्व और कृतित्व

## 1.1 अमरकांत का जीवन परिचय

### 1.1.1 जन्म

अमरकांत का जन्म सन् 01 जुलाई 1925 ई. में भगमलपुर (नगरा) जिला बलिया उत्तर प्रदेश के एक सम्मानित कायस्थ परिवार में हुआ। अमरकांत के दो नाम थें एक श्रीराम और दूसरा अमरनाथ लेकिन आपका पहला नाम चल पड़ा। अमरनाथ यह नाम किसी साधू का दिया हुआ नाम था।

### 1.1.2 माता-पिता

अमरकांत की माँ का नाम श्रीमती अनन्ती देवी था। वह अमरकांत से बहुत प्यार करती थी। रात में नींद से जगाकर अमरकांत को अपने हाथ से दाल-भात खिलाती और सिआरों की आवाज सुनकर कहती कि ''चौर मेंटा में मुँह डालकर हुआ-हुआ बोल रहे हैं।''[1]

अमरकांत के पिता का नाम श्री सीताराम वर्मा था जो कचहरी में मुख्तार थें। वे उर्दू और फारसी जानते थें, उन्हें हिंदी का काम चलाऊ ज्ञान था। वे बहुत ही शान-शौकत से रहते थें। जवानी के दिनों में उन्होने घर पर पहलवान रखकर कसरत और कुश्ती में कुशलता प्राप्त की थी। खूब अच्छा खाते थें और खुब अच्छा पहनते थें। उनका गुस्सा बहुत जबरदस्त था लेकिन वे बहुत जल्दी पश्चाताप तथा करूणा से विगलित हो जाते थे। साल में एक या दो बार पिताजी का लेक्चर अमरकांत को सुनना पड़ता था जिसका मुख्य विषय कभी नागा (उल्लंघन) न करना और रोज स्कूल जाना। सच्चाई पर अमरकांत के पिताजी बेहद जोर देते थें।

### 1.1.3 शिक्षा

अमरकांत की प्रारंभिक शिक्षा प्राथमिक स्कूल नगरा में हुई तथा माध्यमिक शिक्षा गवर्नमेंट हायस्कूल बलिया में। आप उच्च शिक्षा के लिए इलाहाबाद गयें वहाँ आपने बी.ए. तक पढ़ाई की। परंतु इसके बाद आर्थिक परेशानियों के कारण आपको अध्ययन छोड़कर जीविकोपार्जन के लिए इधर-उधर भटकना पड़ा।

### 1.1.4 आजीविका

अमरकांत ने जीविकोपार्जन के लिए आगरे के 'सैनिक' अखबार में पत्रकारिता शुरू की परंतु कुछ दिनों बाद आप वहाँ से काम छोड़कर इलाहाबाद आ गयें। फिर 'अमृत पत्रिका' नामक दैनिक पत्र में आपने कुछ दिन काम किया परंतु अखबार के बंद हो जाने के कारण आपको फिर से बेरोजगारी का सामना करना पड़ा। लेकिन इन्हीं दिनों इलाहाबाद से 'कहानी' पत्रिका का प्रकाशन शुरू हुआ और अमरकांत को उसमें काम मिल गया। लेकिन वह भी ज्यादा दिन नहीं टिक सका और आप नौकरी की तलाश में 'माया' प्रेस से प्रकाशित होनेवाली पत्रिका 'मनोरमा' में काम करने लगें। आपने व्यवसाय के रूप में पत्रकारिता आरंभ की। पत्रकारिता में आपकी विशेष रुचि थी। प्रगतिशील जीवन दृष्टि में आपकी बड़ी आस्था थी। आपकी 'बाबू' नामक पहली कहानी आगरे के 'सैनिक' पत्रिका में छपी। इसके एक वर्ष बाद 'इंटरव्यू' कहानी से आपका गंभीर साहित्यिक सफर आरंभ हुआ।

### 1.1.5 बचपन

अमरकांत का जन्म एक कायस्थ परिवार में हुआ। आपका मिट्टी से बना बड़ा मकान था। जिसमें दो आँगन थें। मकान के बाहर दरवाजे के सामने एक कदम्ब का वृक्ष था। आपके घर में ढेलू नामक एक नौकर था जो आपको रोज स्कूल छोड़ता था। नौकर को आप बड़ा परेशान करते थें। कभी-कभी परिवार की औरतों में ऐसी स्थिति आ जाती थी कि आपको सभाँलना कठिन हो जाता था। आपके दरवाजे पर रोज दुखिया, दरिद्र, अपाहिज, बेसहारा लोग आते थें, मुँह खोल गिड़गिड़ाते थें और लोगों की डाँट डपट खाते रहते थे और लोगो ने कूड़े पर फेंकें जूठे पत्तलों के लिये आपस में लड़ते थें। ऐसे दृश्यों को देखकर अमरकांत उदास हो जाते थें। आपके घर में कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था। आपको घर में एक पंडित जी पढ़ाते थें और उन्होने ही एक बार बताया कि 'सुमित्रानंदन पंत एक महिला कवि है।' पर उसे एक चीज से आप को अवश्य लाभ हुआ। अमरकांत के पिताजी को 'चलता पुस्तकालय' का सदस्य बना दिया। जहाँ से दो

पुस्तकें घर पर पहुँचा दी जाती थीं। जब अमरकांत को 'महाभारत' अथवा शरच्चन्द्र की 'चरित्रहीन' पढ़ने को मिली थी तब आप खाना-पीना तक भूल गए थें। सारा घर सोता था लेकिन अमरकांत कोठरी अथवा बरामदे या आँगन में एक खटोले पर लेटकर लालटेन की पीली-धुँधली-सी रोशनी में किताबें पढ़ा करते थें। निश्चय ही अमरकांत पर बचपन में ही अच्छा असर पड़ा था।

### 1.1.6 पारिवारिक जीवन

अमरकांत की पत्नी का नाम गिरिजा देवी था। आपके दो पुत्र और एक बेटी है। बड़े पुत्र का नाम श्री असनकुमार वर्मा उर्फ अरूण हर्दन और छोटे पुत्र का नाम श्री अरविंद उर्फ बिंदू है। बेटी का नाम संध्या वर्मा है।

### 1.1.7 प्रभाव और प्रेरणाएँ

अमरकांत के घर में कोई साहित्यिक वातावरण नहीं था। बचपन से लेकर आज तक आप दुखिया, दरिद्री, अपाहिजों को देखकर बहुत उदास हो जाते हैं। प्रेमचंद की रचनाएँ आपने कम ही पढ़ी थी। शरच्चन्द्र की रचनाएँ सहज उपलब्ध हो जाती थी। शरच्चन्द्र की रचनाओं ने अमरकांत को प्रभावित किया। एक शाम अमरकांत ने शरच्चन्द्र की कोई सशक्त कहानी पढ़कर समाप्त कर दी। पुस्तक समाप्त करते ही अमरकांत ने अपने अंदर एक अद्भूत परिवर्तन का अनुभव किया। सहसा आपके अंदर से कोई आवाज निकल उठी "मैं लिख सकता हूँ, ठीक वैसा ही, उसी तरह...। यह सोचकर आपको रोमांच आ गया। रोमांटिक ढंग से ही अमरकांत ने लेखन की शुरूवात की।"[2]

उस घटना के बाद अमरकांत में कुछ परिवर्तन होने लगा। कहानियाँ आपके अंदर जन्म लेने लगीं। मैं शरच्चन्द्र की तरह ही उच्चकोटि की कहानियाँ लिख सकता हूँ ऐसी अमरकांत की धारणा पक्की हो गयी। इसी बीच गांधीजी और नेहरू जी का देश की जनता पर व्यापक एवं गहरा प्रभाव था और इसी काल में महात्मा गांधी तथा पंडित नेहरू की आत्मकथाएँ भी आपको पढ़ने को मिलीं। इन आत्मकथाओं का

अमरकांत पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसके साथ अमरकांत ने प्रेमचंद, शरच्चन्द्र, रवींद्रनाथ टैगोर, गोर्की, डास्यायवस्की, मोपासां, रोमा-रोला, जैनेंद्रकुमार, अज्ञेय, इलाचंद जोशी, रांगेय राघव तथा अन्य बहुत से लेखकों की रचनाएँ पढ़ी थीं। गोर्की और डास्यायवस्की के प्रभाव को आप भूल भी नहीं सकते थें। इन दोनों रचनाओं ने अमरकांत को गहराई से हिला दिया और दो अन्य लेखकों ने भी आप पर भारी प्रभाव डाला उनके नाम थें टालस्टाय और चेखव। मानवता में जो कुछ श्रेष्ठ है वह चेखव की रचनाओं में अभिव्यंजित हुआ है। अमरकांत का जीवन एकदम बदल गया और साहित्य के प्रति आस्था उत्पन्न हो गयी। सभी साहित्यकारो से प्रेरणा लेकर अमरकांत ने हिंदी भाषा और हिंदी साहित्य के लिए काम करने का निश्चय किया।

## 1.2 ***व्यक्तित्व की विशेषताएँ***

### 1.2.1 बहिरंग व्यक्तित्व

"अमरकांत तो आधुनिक युग के संसार संबंधी (सांसारिक) लेखक हैं। अमरकांत अपनी पोशाख ऋतु के अनुसार तय करते हैं उदा. गर्मी हो तो पैन्ट, बुशशर्ट और चप्पल, ठंडी के दिनों में बंद गले का कोट, पैन्ट, मफलर और जूते। अमरकांत लगातर स्वनिर्मित एक आतंरिक अनुशासन में जीते हैं, अपने आपको सहेज कर रखते हैं और अपनी संवेदनशीलता को गरिमा के स्तर पर कायम रखने में प्रयत्नशील रहते हैं।"[3]

### 1.2.2 अंतरंग व्यक्तित्व

#### 1.2.2.1 एक बेहद जटिल व्यक्तित्व

दरअसल अमरकांत के बारे में कुछ भी कहना बेहद मुश्किल काम हैं क्योंकि आपने अपना विश्लेषण खुबियों, खामियों के स्तर पर न कभी किया न होने दिया। अपने बारे में कुछ सोचने की आजादी आप किसी को नहीं देते और बोलने, निर्णय लेने की तो बिल्कुल भी नहीं। आप संबंध अपनी शर्तो पर बनाते हैं और शायद अपनी शर्तों पर तोड़ते है। ऊपर से अबोध लगनेवाले अमरकांत भीतर से एक बेहद जटिल व्यक्तित्व हैं।

### 1.2.2.2 स्वभाव

''अमरकांत जीवन के हरक्षेत्र में क्या चाहिए अथवा क्या नहीं चाहिए यह भली भांती स्पष्ट करते हैं। अब एक बात है कि आपकी बेटी संध्या का विवाह एक जगह तय हो रहा था इसके लिए आप बड़े उत्सुक भी थें कि यह बात बन जायेगी लेकिन वर पक्ष ने जब दहेज की बात का प्रस्ताव रखा तो अमरकांत ने इस प्रस्ताव को इन्कार कर दिया। आप दहेज के खिलाफ हैं, आप चाहते तो अपने प्रकाशकों से रॉयल्ट्री वसूल कर यह काम कर सकते थें लेकिन यह बात आपके उसूलों में बैठती नहीं थी।''[4] अपनी इसी सजगता के कारण अमरकांत धूर्त से धूर्त लोगों की संगत में लंबे समय तक रहकर भी उनसे अलग और अकंलक रहते आये हैं। अमरकांत जितने बेहतर लेखक है उतने ही बेहतर इन्सान भी है। आप को अपने देश के लोगों से प्यार है। आप में साहस, अद्‌भूत जीवन शक्ति, त्याग, बलिदान और बरदाश्त करने की आपकी क्षमता, उदारता और विनम्रता, हार को जीत में परिवर्तित करने की आदत, साहस और विलक्षण प्रतिभा है। अमरकांत इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट हैं कि आपको कौन, कब, क्या और किस हद तक चाहिए अथवा नहीं चाहिए।

### 1.2.2.3 भारत माँ के प्रति लगाव

अमरकांत जब सातवी या आठवी कक्षा में पढ़ते थें तब हिंदू-मुस्लिम दंगे हुआ करते थें। कुछ समय बाद आपने तथा आपके मित्रों ने मिल कर स्वतंत्रता के आंदोलन में भाग लिया। ''भारत माँ को आजाद करने के लिए असंख्य लोगों ने कुर्बानियाँ दी थी तथा अमरकांत और आपके मित्र भी कुर्बानियाँ देने को तैयार थें। गांधीजी के प्रभाव को आपने एक बार अपनी आँखो से देखा था। तब से अमरकांत के अंदर एक जबरदस्त उथल-पुथल मची हुई थी। अब आजादी अमरकांत के लिए 'भारत माँ की मुक्ती' जैसी रहस्यमयी बात नहीं थी बल्कि करोड़ो किसानों, मजदूरों एवं शोषितों-पीड़ितों की आर्थिक स्वतंत्रता थी। जहाँ भगतसिंह, चन्द्रशेखर आझाद जैसे क्रांतिकारी तथा महात्मा गांधी और पंडित नेहरू जैसे महान नेता

पैदा हूये थें। वहाँ अमरकांत जी-जान से अपना योगदान देने को तैयार थें। आप क्रांतिकारी विचारों के लोगों के संपर्क में आने लगे थें। हाईस्कूल परिक्षा के बाद अमरकांत क्राँगेस सोशलिष्ट पार्टी का मेंबर बन गये। सन् 1942 में गांधीजी ने 'भारत छोड़ो' आंदोलन छेड़ दिया। गांधीजी के 'करो या मरो' इस आवाहन पर अमरकांत ने पढ़ाई छोड़ देने का निश्चय कर दिया। आप दो वर्ष तक भूमिगत आंदोलन में थे।''[5]

### 1.2.2.4 साहित्य के प्रति गहरी आस्था और दिलचस्पी

अमरकांत के जीवन में साहित्य के प्रति गहरी आस्था और दिलचस्पी थी। अमरकांत में औसत जिंदगी जीनेवाले औसत इन्सान का अभिमान कूट-कूट कर भरा है। प्रयाग विश्वविद्यालय से बी.ए. करने के बाद आपने हिंदी और हिंदी साहित्य के लिए काम करने का निश्चय किया। अमरकांत को सरकारी नौकरी आसानी से मिल गयी होती पर आपने पत्रकार बनने का फैसला करके आगरा के दैनिक पत्र 'सैनिक' के संपादकीय विभाग में कार्य शुरू किया।''[6] लेकिन बाद में अमरकांत का उस काम में मन नहीं लगा तो आपने मन ही मन यह पक्का कर लिया कि मुझे लेखक बनना है। आप प्रगतिशील लेखकों के संघ की बैठक में ले जाने लगें। पहले आप लेखकों और साहित्यकारों के बारे में बड़ी हसरत से सोचा करते थें, पर अब आप उन्हीं के बीच आ गये और स्वयं एक साहित्यकार बन गयें।

### 1.2.2.5 मौत से संघर्ष

''अमरकांत सन् 1954, जनवरी में हृदयरोग का शिकार हो गयें। आपको अपने जीवन की कोई आशा नहीं थी। आप नौकरी छोड़कर लखनऊ आ गयें। जब आप जीवन और मृत्यु के झूले में झूल रहे थे तब उस समय आपको एक ही अफसोस था कि जो कुछ आप लिखना चाहते है, लिख नहीं सकें। आप जीवन से और अपने देश से बहुत प्यार करते थें। सब कुछ खत्म हो जायेगा और एक जीवन व्यर्थ ही नष्ट हो जाएगा यह विचार आपको बार-बार सताता रहता था। शायद ऐसी भावनाओं एवं विचारों के कारण आप मौत से संघर्ष कर सकें और फिर जीवित खडे हो गयें।''[7]

फिर बालिया गाँव आ गयें। बेकारी कष्टदायक चीज थी जो बार-बार संकट पैदा कर रही थी। एक भय भी अमरकांत के अंदर था। आप अपने को अभी मरने नहीं देना चाहते थे। आपने अपनी सारी शक्ति लगा देने का निश्चय किया। अमरकांत का साहस, अद्‌भुत जीवन शक्ति, त्याग और बलिदान, बरदाश्त करने की क्षमता आपके जीवन को सार्थक बना पाती है।

आप प्रकाशकों से अपनी रचनाओं का मोल-भाव करने से कतराते हैं। देश में होने वाली बड़ी से बड़ी और बारीक से बारीक रद्‌दो बदल में आप अपनी भागीदारी परिभाषित करते हैं। आप कभी अपने आपको चर्चा का विषय नहीं बनाना चाहते। अपने परिवार के सदस्यों की बीमारी के लिए जुझते हुए नजर आते हैं। बच्चों की पढ़ाई के लिए या नौकरी के लिए तथा शादी-ब्याह की चिंता से ग्रस्त ऐसे दौर से भी अमरकांत की मनःस्थिति सक्रांमक नहीं होती। दूसरों के लिए आपकी जिजीविषा प्रेरक शक्ति का काम करती है।

## 1.3 *अमरकांत का कृतित्व*

इस दशक के प्रगतिशील कथाकारों में अमरकांत का नाम विशेष महत्त्वपूर्ण है। अमरकांत मूलतः प्रगतिशील और मानव-मूल्यों के कहानीकार हैं। आपकी कहानियों में अधिक मानवीय संवेदनाएँ हैं। आप परिवेश के दबाव में बनते-बिगड़ते मानवीय संबंधों, मूल्यों का टूटन का चित्रण अपनी कहानियों में करते हैं। अमरकांत ने अपनी कहानियों की कथावस्तु साधारण जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं और स्थितियों से चुनी है। आपने अधिकांश कहानियों में नवीन आर्थिक परिस्थितियों से संघर्षशील मध्यवर्गीय समाज की समस्याओं, विशेषताओं, प्रवंचनाओं और जीवन के भूख का मर्मभेदी चित्रण किया है। आज की नई कहानी में नयापन भरनेवालों में अमरकांत अग्रणी हैं। आपकी कहानियाँ पत्थर की तरह ठोस और कंकरीट की तरह शक्ति संपन्न हैं।

अमरकांत की 'बाबू' नामक पहली कहानी आगरे की 'सैनिक' पत्रिका में छपी। इसके एक वर्ष बाद 'इंटरव्यू' कहानी से अमरकांत का गंभीर साहित्यिक सफर प्रारंभ हुआ। इसप्रकार प्रारंभिक अवस्था में

आपने 'बाबू', 'इंटरव्यू', 'कम्युनिष्ट' आदि पाठकों का ध्यान आकर्षित करनेवाली कहानियाँ लिखीं। कहानी पत्र के संपादकीय विभाग में आने पर आपने अपनी रचनात्मक प्रतिमा का विकास किया। तब आपने 'डिप्टी कलक्टरी', 'मौत का नगर', 'दोपहर का भोजन', 'छिपकली', 'मूस', आदि अनेक प्रभावशाली कहानियाँ लिखीं।

**अमरकांत की प्रकाशित रचनाएँ**

## 1.3.1 कहानी संग्रह

| | | |
|---|---|---|
| 1) जिंदगी और जोंक | 1956 | नया साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद |
| 2) देश के लोग | 1964 | आधुनिक प्रकाशन, बेनीगंज, इलाहाबाद |
| 3) मौत का नगर | प्रथम संस्करण 1973 | रचना प्रकाशन, खुल्दाबाद, इलाहाबाद |
| 4) मित्र मिलन | | |
| 5) कुहासा | | |
| 6) अमरकांत की कहानियाँ भाग - I | | |
| 7) तूफान | | |
| 8) कलाप्रेमी | | |
| 9) प्रतिनिधी कहानियाँ | | |

## 1.3.2 उपन्यास

| | |
|---|---|
| 1) सुखा पत्ता | पी. पी. एच्. नई दिल्ली |
| 2) आकाश पक्षी | वोरा एक कंपनी, बंबई |

3) काले उजले दिन वोरा एक कंपनी, बंबई

4) सुख जीवी

5) कँटीली राह के फूल

6) बीच की दीवार

7) ग्राम सेविका

### 1.3.3 नाटक

एन. सी. डी. और बंबई, लखनऊ, गोरखपुर, आगरा, गढ़वाल तथा कुछ अन्य स्थानों की नाट्य संस्थाओं द्वारा कहानियों का नाट्य रूपांतरण एवं प्रदर्शन किया।

### विश्वविद्यालय में रचनाएँ

1) दिल्ली पब्लिक स्कूलों की इण्टरमीडिएट की पाठ्य पुस्तक में 'बहादुर' कहानी शामिल हुई है।

2) इलाहाबाद विश्वविद्यालय, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, कानपुर विश्वविद्यालय, मेरठ विश्वविद्यालय, रीवाँ विश्वविद्यालय, मध्यप्रदेश के स्नातक एवं स्नातकोत्त कालेजों में जिंदगी और जोंक, दोपहर का भोजन, डिप्टी कलक्टरी, मित्र, मिलन, बस्ती, मनोबल आदि कहानियाँ शामिल की गयी हैं। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय गुजरात, बिहार, महाराष्ट्र और हिमाचल प्रदेश में रचनाएँ शामिल हैं।

3) मानव संसाधन मंत्रालय भारत सरकार के अंतर्गत राष्ट्रीय ओपेन स्कूल में 'दोपहर का भोजन' पाठ्यक्रम में चुनी गयी हैं।

4) दिल्ली, लखनऊ, मुंबई दूरदर्शन से अमरकांत की कहानियों पर फिल्म प्रदर्शित की है।

5) देश के अनेक आकाशवाणी केंद्रों से कहानियों का पाठ एवं मंचन सादर किया।

6) दूरदर्शन केंद्र लखनऊ से कहानियों का पाठ और कई साहित्यिक कार्यक्रम एवं परिचर्चा में अमरकांत

शामिल हुए।

7) राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दिल्ली और लखनऊ के मेघदूत तथा आगरा, इलाहाबाद, गोरखपुर, गढ़वाल, मुंबई की नाट्य संस्थाओं द्वारा मूस, हत्यारे, बस्ती, कुहासा, आदि कहानियों का अमरकांत ने मंचन किया।

8) मुंबई में श्री सत्य देव दुबे द्वारा 'हत्यारे' कहानी की विशिष्ट नाट्य प्रस्तृती की।

9) हाल ही में लिखी हूयी रचनाएँ

'इन्ही हथियारों से' (सन् 42 के भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि पर लिखा बड़ा उपन्यास)

'खबर का सुरज' (पत्रकारों के जीवन पर लिखा उपन्यास)

### 1.3.4 बाल साहित्य

1) खूँटा में दाल है

2) वानर सेना

3) नेउर भाई

4) मँगरी

5) दो साहसी बच्चे

### 1.3.5 प्रौढ साहित्य

1) झगरूलाल का फैसला

2) एक स्त्री का सफर

3) सुग्धी चाची का गाँव

### अनुवाद

अनेक प्रादेशिक भाषाओं में तथा विदेशी भाषा अंग्रेजी, रूसी, जर्मन, हंगरी, फ्रेंच, जापानी भाषा

में कहानियों का अनुवाद अमरकांत ने किया है। उपन्यास 'सुखा पत्ता' का मलयालम में अनुवाद भी आपने किया है।

**पेंग्विन इंडिया**

पेंग्विन इंडिया द्वारा प्रकाशित हिंदी कहानियों के अंग्रेजी संकलन (संपादक, गार्डन रोडरसल) तथा ऐसे ही दूसरे संकलन (संपादक सारा राय) में अमरकांत की एक-एक कहानी शामिल की है।

**रेडियो, दूरदर्शन तथा नाट्य संस्थाएँ**

रेडियो से कहानियों के तथा अमरकांत के नाट्य रूपांतरण का प्रसारण भी कर दिया है। दिल्ली दूरदर्शन के शुरूआती समय में अमरकांत की 'डिप्टी कलक्टरी' तथा 'दोपहर का भोजन' नामक कहानियों पर फिल्म निर्माण किया है (निर्देशक - श्री चमन बग्गा)

## 1.4 ***सम्मान एवं पुरस्कार***

अमरकांत टूटते हुए मध्यवर्ग के कथाकार हैं। आपने अपनी कहानियों की कथावस्तु साधारण जीवन में घटित होनेवाली घटनाओं और स्थितियों से चुनी हैं। आप कहानी के पात्रों के सुख-दुख को अपना सुख-दुख समझते हैं। इसी वजह से अमरकांत को अनेक सम्मान एवं पुरस्कार मिले हैं।

1) सोवियत लॅंड नेहरू पुरस्कार (पंद्रह दिन की सोवियत संघ की यात्रा)

2) यशपाल सम्मान

3) संस्थान सम्मान (अब उत्तरप्रदेश का साहित्य भूषण पुरस्कार)

4) जन सांस्कृतिक सम्मान

5) इलाहाबाद विश्वविद्यालय द्वारा सम्मान

6) इलाहाबाद के पत्रकारों द्वारा सम्मान

7) मैथिलीशरण गुप्त राष्ट्रीय सम्मान (मध्यप्रदेश)

8) महात्मा गांधी सम्मान (उत्तरप्रदेश)

और 'डिप्टी कलक्टरी' इस कहानी को वार्षिक प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ।

## निष्कर्ष

अमरकांत के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के अध्ययन के पश्चात् मैं इस निष्कर्ष पर पहूँची हूँ कि आपका व्यक्तित्व गंभीर, बेहद, जटिल है। आपको साहित्य के प्रति गहरी आस्था और दिलचस्पी है। आप एक ऐसे कथाकार हैं जिन्होंने कभी नकल में कहानियाँ नहीं लिखीं आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित भी किया गया है, आपका व्यक्तित्व प्रगतशील, विचारक, गहन अध्येता मनुष्य की यथार्थता को सार्थक रूप देने में अनेक तुफानों का सामना एवं संघर्ष कर अपने जीवन को आदर्शमय दिशा देनेवाला दृष्टिगोचर होता है। अमरकांत लगातर स्वनिर्मित एक आंतरिक अनुशासन में जीते हैं, अपने आपको सहेज कर रखते हैं और अपनी संवेदनशीलता को अपनी गरिमा के स्तर पर कायम रखने में प्रयत्नशील रहते आये हैं।

अमरकांत अपनी जमीन से जुड़े ऐसे कहानीकार है जो शिल्प की बुनावट पर और रोमांस भावुकता के बल पर खड़े हैं। साधारण जीवन से उठाये हुये अमरकांत अपने पात्रों के द्वंद और क्रिया-कलाप सच्चाइयों का अन्वेषण करते नजर आते हैं। आपको जीवन में, जनता में, साहित्य में गहरी आस्था और दिलचस्पी है। आपका जीवन और साहित्य के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि आपका व्यक्तित्व और कृतित्व न सिर्फ अभिन्न था बल्कि परस्परावलंबी भी था। आप अपने परिवेश से कितना जुड़े हुए हैं यह आपके रहन-सहन, बात, व्यवहार से स्पष्ट होता है।

इसप्रकार साहित्य के हर क्षेत्र पर प्रकाश डालकर आपने अपने कृतित्व की पहचान दी है। इसीकारण अमरकांत का व्यक्तित्व दिलचस्प और बहुगुणों से युक्त दिखायी देता है।

## संदर्भ संकेत

1. अमरकांत के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की पड़ताल, अमरकांत, पृ. 10

2. वही, पृ. 15

3. वही, पृ. 100

4. वही, पृ. 103

5. वही, पृ. 21

6. वही, पृ. 30

7. वही, पृ. 33